।। कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

।। अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ।। ।। गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामिने नमः ।।

।। योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।। ।। चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249
Websiet : www.kobatirth.org
Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
परिवार डाइनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद – ३८०००७
(079) 26582355

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

दानकथा

अर्थात् वज्रसेन चरित्र ।

प्रकाशक बद्रीप्रसाद जैन मालिक श्रीजैन भारतीभवन काशी ।

वीर सम्वत् २४५२ सन् १९२६ ईस्वी

प्रथमवार १००० [न्योछावर ७ आना

विद्याविलास प्रेस, गोपालमन्दिर लेन, बनारस ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐ

नमः सिद्धेभ्यः ।

सँघई भारामल कृत-

अथदानकथाप्रारभ्यते ।

सवैया तेईसा ।

देव नमौ अर्हंत सदा अरु सिद्ध समूहनकौं चितलाई ।
सूर अचारजकौं प्रनमो प्रनमो जु उपाध्यायके नित पाई ॥
साधनमों निर्ग्रंथ मुनी गुरु परम दयाल महा सुखदाई ।
जे पंच गुरू जगमैं सु नमों जिनके सुमिरें भव ताप नशाई ॥१॥

For Private And Personal Use Only

दोहा—पंच परम गुरु सुमिरिकैं, सरस्वतिकों शिरनाय।
दान कथा बरनन करौं, सुनौ भविक चितलाय ॥२॥

चौपाई।

श्री गौतमके सुमिरों पाय। दान कथा जु कहों मन लाय॥
दान बड़ो संसार मझार। दान करौ जु सबै नर नारि ॥३॥
दान विना धृग जीवन होय। तातैं दान करौ सब कोय॥
धनकी सोभा जानौ दान। दान विना नर पसू समान ॥४॥
दानहिंतें धन संपति होय। दुख दरिद्र नाशै सब कोय॥
माफिक सक्ति दान नित देय। इस भव यश पर भव सुख लेय ॥५॥
दान कहो जु चारि परकार। भिन्न भिन्न सुनियै नरनारि॥
प्रथमहिं दीजै दान अहार। जासों लच्छि भरै भंडार ॥६॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूजो औषधि दान सु देय। पर भव निरमल तनसो लेय॥
होय निरोग ताको जु शरीर। कामदेव सम गुन गंभीर॥७॥
तीजो शास्त्रदान सुखकार। तासों उपजै बुद्धि अपार॥
पंडित है सबमें शिरमौर। ताकी सरवरि करै न और॥८॥
उत्तम कुलमें उपजे जाय। दुख दरिद्र सब जाय नशाय॥
चौथो अभय दान सुखकार। सो जानो सबमें सिरदार॥९॥
मारत देखै जियकों कोय। ताके प्रान बचावै सोय॥
कै तौ हुकम थकी अब जान। सो जु बचावै ताके प्रान॥१०॥
ना तरु द्रव्य जु दै करि सोय। ताके प्रान बचावै कोय॥
द्रव्यहुकी जौ सकति न होय। तन बलसों जु बचावै सोय॥११॥
जौ एकै हू सकति नहिं होय। मनमें करुना कीजौ सोय॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेरो जोर चलै अब नाहिं। मुझ आगें यह घात कराहिं ॥१२॥
सकति सु माफक दंड सु लेय। प्रोषादिक उपवाश करेय ॥
इस विधि दान चतुर परकार। भाँषो श्रीमुनि मुखतैं सार ॥१३॥
तातैं दान करौ सब कोय। दानहिं सार जगतमें होय ॥
दान दयो बज्रसेंनि कुमार। ताको कथन सुनो नर नारि ॥१४॥
जंबू दीप दीपनमें सार। भरत क्षेत्र सोभै अधिकार ॥
मरहट देश तहाँ अब जान। धारापुर तहँ नगर बखान ॥१५॥
सो नगरी महिमा को कहै। अमर पुरी मानो वह लहै ॥
सब सोभा जु बरनि करि कहौं। बढ़ै कथा कछु अंत न लहौं ॥१६॥
तिस नगरीको भूपति जान। यशो भद्र तसु नाम बखान ॥
परजा पालै अति सुखकार। दीन जननको पालन हार ॥१७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्याय नीतिसों नित पग धरै । भूलि अनीति न कबहूं करै ॥
ताही नगर इक सेठि सुजान । नाम महीधर कहो बखान ॥१८॥
पूरव पुन्य उदय अब सोय । ताके घर लच्छिमी बहु होय ॥
छप्पन धुजा लहकें जहँसार । जाकें छपन कोटि दीनार ॥१९॥
हेमवती जाके घर नारि । शील वंत गुनकी अधिकार ॥
नित प्रति पूजा दान सु करै । जिनवर नाम सदा उच्चरै ॥२०॥
ताकें युगल पुत्र सो भए । दुख सुख रूप तहाँ परिनए ॥
जेठो है सो मतिको हीन । लघुतौ जानौ चतुर प्रवीन ॥२१॥

दोहा ।

जेठो मति हेठो कुटिल, लघु सु सरल परिनाम ॥
उपजे एकहि कूखमें, पाप पुन्य परमान ॥ २२ ॥

For Private And Personal Use Only

चौपाई ।

जेठो है महसेंनि कुमार । बज्रसेंनि लघु जानौ सार ॥
बसु बसु बर्ष तने जब भए । मुनिके पास पढ़नकों गए ॥२३॥
जेठो सठ बुद्धी अब जान । मूरख है सो दुखकी खान ॥
बरषैं सीं बीतीं अब सोय । अंकु एक आवै नहिं कोय ॥२४॥
लघुतौ जानौ चतुर प्रवीन । सो जानौ अति गुन करि लीन ॥
एकु जु अंक पढ़ावै मुनी । तातें कुमर पढ़ै चौगुनी ॥२५॥
सो षट महिना भीतर सार । बिद्या सर्ब पढ़ी अधिकार ॥
फिरि दोनों निज घरकों गए । तात पास सो पहुंचत भए ॥२६॥
दोनो सुतन बचन सुनि सोय । बह सठ बह जु चतुर अब होय ॥
जेठो देखि भयो जु उदास । लहुरो देखैं परम हुलास ॥२७॥

For Private And Personal Use Only

दोहा ।

इस विधिसौं दोनो कुमर, रहत भये तहँ सोय ॥
और कथन आगें अबै, जो कछु जैसो होय ॥२८॥

चौपाई ।

देश देशमें जौंहरी जान । बशै तहाँ बहु धनकी खान ॥
तिनकें पुत्री सुंदर सार । जानो तहां गुनन अधिकार ॥२९॥
तिनकी सगाई आबैं सार । लहुरे कुमरकों अधिक सु सार ॥
जेठे कुमरको जानो सोय । करै कबूल सगाई न कोय ॥३०॥

गीता छंद ।

इतनी जु सुनिकरि सेठि जबही मनमैं करत विचार जू ।
जेठेके आगे लघुकों परनो जीवनकों धरकर जू ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जेठेके आगें लघुकों व्याहौं पिता धरम यह है नहीं।
तातैं जु पहिलैं जेठो परनौ तब लघुकों व्याहौ सही ॥३१॥

चौपाई।

एसो मनमें करत बिचार। आगें और सुनौ बिस्तार॥
जन्म दरिद्र बनिक इक जानि। सो परदेशी कहो वखानि॥३२॥
ताकें एक सुता अब सोय। षोड़स बर्ष तनी जो होय॥
पूरब पाप उदय अब जानि। दारिद्रीकें जनमीं आनि॥३३॥
रूपवान जानौ अब सार। शीलवती गुनकी अधिकार॥
सो आयो धारापुर मांय। आगें और सुनौ मनलाय॥३४॥
सेठि सुनी जह खबरि जु सार। मनमें कैसो करत विचार॥
कछुक द्रव्य अब दै करि सोय। जेठे सुतकों परनो सोय॥३५॥

For Private And Personal Use Only

एक दिवश जु बनिक बुलवाय । तासों तब कैसें बतलाय ॥
आदर बहुत करो सनमान । बहु विधि दीनो बीरा पान ॥३६॥
तबहि बनिकसों कैसें कही । हमरी बात सुनो तुम सही ॥
तुमपर कछु हम मागें जोय । अब हमकों दीजे तुम सोय ॥३७॥
तबही बनिक बोलो कर जोरि । सेठि बचन तुम सुनौ बहोरि ॥
तुम लायक हमपै कह होय । जो मो पर जाचत हो सोय ॥३८॥
तबही सेठि फिरि कैसें कही । हमरी बात सुनो तुम सही ॥
तुमरे घर पुत्री है सार । हम सुतकों परनो सुखकार ॥३९

छंद गीता ।

करजोरि करि तब बनिक बोलो सेठि सुनो मन लायकें ।
कोटी जु ध्वज तुम साहु जानौ मै दरिद्रो आयकें ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुमरी जु सरवरि को जु नाहीं बात सुनौ सुखकार जू ।
तुम जोग लायक हम जु नाहीं यह सुनो निरधार जू ॥४०॥
इतनी जु सुनि करि सेठि बोलो बनिक सुन निहचैं सही ।
लच्मी जु अति चंचल सु जानौ कहुँ सदां जु रही नहीं ॥
आखरि जु हम तुम एक सबही बात सुनो मन लायकैं ।
ज्यों त्यों संवोधो बनिक तबहीं लई कबूल करायकैं ॥४१॥

दोहा ।

अपनी अपनी गरजकों, इस जगमें नर सोय ।
कहा कहा करतो नहीं, गरज बावरी होय ॥ ४२ ॥
लच्छिमी लोभ दिखायकें, बड़ो करो सनमान ।
लई कबूल करायकैं , तसु पुत्री गुनवान ॥ ४३ ॥

For Private And Personal Use Only

चौपाई ।

तुरतहिं पंडित लयो बुलाय । घरी मुहूरत दिन सुधवाय ॥
मंडफ पुनि तब दयो छबाय । व्याह रचो ताको सुखदाय ॥४४॥
इत उत द्रव्य जु दै करि सोय । व्याह करो जेठे सुत कोय ॥
बाजे बजैं तहाँ सुखकार । जुवती गावैं मंगल चार ॥४५॥
भामरि परीं तहाँ अब सोय । बहु विधि आनँद मंगल होय॥
इस विधिसौं महसैन कुमार । सो परनो जानौ सुखकार ॥४६॥

दोहा—इस विधिसों जेठो कुमर, व्याहि लयो सुखकार ।
अब लघु सुतके व्याहको, बरनन सुन नरनारि ॥४७॥

चौपाई ।

मरहट देश बसै सुभजान । महापुरी तहां नगर बखान ॥

सोभा बरनत होय अबार । मानौ स्वर्गपुरी अवतार ॥४८॥
ताहि नगर इक सेठि सुजान । सोमसैन तसु नाम बखान ॥
पूरव पुन्य उदय अब सोय । जाके घर लछिमी बहु होय ॥४९॥
ताकैं एक सुता अवतरी । मदनवती जानो गुनभरी ॥
सुन्दर रूप अधिक गुनधार । मानौ सुर कन्या अवतार ॥५०॥
ताकी सगाई टीका सार । बज्रसैनकौं भेजो हार ॥
पहुंचो विप्र धारापुर जाय । सुनिकैं सेठि महा सुखपाय ॥५१॥
नगर बुलावा दीनो जबै । जुरे नगर नर नारी तबै ॥
जुवतीं गावैं मंगलचार । अनँद बधाए होत अपार ॥५२॥
घरी मुहूरत दिन सुधवाय । टीका कुमरको लयो चढ़ाय ॥
जाचक जनकों दान जु दयो । सज्जनको सनमान सु लयो ॥५३॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विप्र विदा कीनो पुनि जबै । दयो अतुल धन ताकौं तबै ॥
चलत भयो तहँतैं अब सोय । दिनअरुरातिगिने नहिंकोय ॥५४॥
चलत चलत जब कुछ दिन गए । महापुरीमें पहुँचत भए ॥
सब वृत्तान्त कहो समभाय । सुनिकरि सेठिपरमसुख पाय ॥५५॥

सोरठा ।

मुहूरत दिन सुधवाय, सुभ लगुनै पठवाइयो ।
और सुनो मनलाय, जैसो कथन जु आइयो ॥ ५६ ॥

चौपाई ।

टीका दिन पहुँचो जब आय । तब तहां सजी बरात बनाय ॥
हय गय रथ बाहन करि सार । चउरँग दल साजे असवार ॥५७॥
अरबी सुतरीं अरु करताल । तूर मृदंग भेरि कंसाल ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सब सोभा जु बरनि करि कहौं । बढ़ै कथा कछु अंत न लहौं ॥५८॥
चलत चलत जब कछु दिन गए । महापुरीमें पहुँचत भए ॥
डेरा बागन दीने जाय । तहां निसान रहे फहराय ॥५९॥
नेगचार तहँ बहु विधि भए । अरु षटरसके भोजन दए ॥
एक पहर निशि बीती जबै । सुभ बारौठो कीनो तबै ॥६०॥
हय गय रथ बांहन सजवाय । चउरँग सैन सजी सुखदाय ॥
अरबी सुतरी तहँ बजवाय । नौबतिखानो दयो झराय ॥६१॥
तुरही सुरही अरु करनाल । तूर मृदंग झांझ धुनि ताल ॥
आतसबाजी छूटै सोय । बाजनके कुहराम जु होय ॥६२॥
इस विधिसौं दरबाजैं जाय । बरकों देखि सेठि सुखपाय ॥
सोभो दीनो अधिक अपार । कौन कहै ताको विस्तार ॥६३॥

For Private And Personal Use Only

कंचन कलश दए तहँ सोय। खासा मलमल आदिक होय॥
कुंडल कड़े दीने सुखकार। अरु दीने गज मोतिन हार॥६४॥
माल खजाने दीने सोय। कहँ लौं ताको बरनन होय॥
फिर आये निज डेरन माहिं। अनँद बधाए भए बनाय॥६५॥
बहुत बात को कहै बढ़ाय। राखे तीन दिवस बिरमाय॥
चौथो दिन लागो पुनि जबै। भई बरात विदा सो तबै॥६६॥
पुत्रीकों समझावै तात। सुन लीजौ अब हमरी बात॥
कुलकी टेक चलो तुम सोय। जासौं मेरी हँसी न होय॥६७॥
तुमतैं जेठी जो कोउ होय। भूलि न उत्तर दीजौ कोय॥
सासु हुकम तुम सिर पर धरौ। यह आज्ञा मेरी चित धरौ॥६८॥
इस विधि सीख तात जब दई। पुत्री चितमें सब धरि लई॥

कूंच करो तहँतैं अब सोय । दिन अरुरातिगिनैनहिंकोय ।।६९।।
चलत चलत जब कछु दिन गए । धारापुरमैं पहुँचत भए ।।
पहिलें श्रीजिन मंदिर जाय । बरकन्याकौं धोक दिवाय ।।७०।।
वसु विधि पूजे श्रीजिनचंद । जातैं कटैं करमके फन्द ।।
फिर घर में बहु लीनी सार । जुवती गावैं मंगलचार ।।७१।।
जाचक जनकों दान सु दयो । सज्जनको सनमान सु लयो ।।
इस विधिसों घर आये सार । अनंद बधाए होत अपार ।।७२।।
दोहा—इस विधिसों अब व्याह करि, निजघर आए सोय ।
और कथन आगें सुनो, जो कछु जैसो होय ।।७३।।
जेठो लघु दोनो कुमर, व्याहि लए सुखकार ।
और कथन आगें भाविक, सुनो सबै विस्तार ।।७४।।

For Private And Personal Use Only

चौपाई ।

जेठो मनमें करत विचार । देखौ तात की दुविधा सार ॥
जनम दरिद्रीकैं अब सोय । ताकैं मोकों परनो होय ॥७५॥
कोटीध्वज जौंहरीकैं सार । सो परनो लहुरो जु कुमार ॥
हय गय रथ दीने सजबाय । बहुत द्रव्य तहँ खर्च कराय ॥७६॥
२ ऐसैं मनहिं विचारै सोय । मानै दोष लघुसों बहु जोय ॥
लघुतौ मानै बासों प्रीति । बह राखै वासौं विपरीति ॥७७॥
दोहा—इस विधिसों दोनो कुमर, रहत भए अब सोय ।
निज निज टेव न छांड़ई, जैसी जाकी होय ॥ ७८ ॥

गीता छन्द ।

तिस काल लब्धि सु आय पहुँचो सो सुनो नरनारि जू ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक दिन पुनि सेठि जानो चढ़ो महल सुखकार जू ॥
सो सांझ समए करत संध्या जपत उर नवकार जू ।
बज्रपात जु तापै टूटो प्रान गए ततकाल जू ॥ ७९ ॥
तहँ शुद्ध मन करि प्रान छूटे जपत उर नवकार जू ।
प्रथमहिं स्वरगके मध्य जानौ लयो सुर अवतार जू ॥
तातैं सुनो नर नारि सबही जपौ उर नवकार जू ।
जाके जपत दुख पाप छूटैं होत भविदधि पार जू ॥ ८० ॥

चौपाई ।

कोलाहल जु नगरमैं भयो । सबरो नगर तहां जुरि गयो ॥
आए भूप तबहिं तहँ सोय । दोनौ सुतन समझावै जोय ॥८१॥
जहतौ कालबली अधिकाय । जासौं जोर चलै कछु नाहिं ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शेष खगेश महेश जु सोय। कालके बसमैं हैं सब कोय ॥८२॥
इस विधि समझाए सु कुमार। दई दिलासा तब भूपाल ॥
सेठिके तनकों दग्ध कराय। निजनिजघरपहुँचेसब जाय ॥८३॥
दोनौ भ्रत रहैं अब सोय। निज निज टेब न छाडैं कोय ॥
इस विधिसों जु कछू दिन गए। आगें और जु कारन भए ॥८४॥
एक दिवस भूपति दरवार। बैठो तो जो सभा मझार ॥
मंत्रिनसौं तब भूपति कही। हमरी बात सुनो तुम सही ॥८५॥
पुत्र सेठिके हैं अब दोय। कहौ तातपद किसकों होय ॥
तब मन्त्री बोलैं करजोरि। हो महराज सुनो सु बहोरि ॥८६॥
न्याय रूप तौ ऐसो होय। जेठे सुतकों दीजै सोय ॥
अरु लहुरो चतुरंग अपार। चाहौं ताहि देहु भूपाल ॥८७॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इतनी सुनिकैं भूपति जबै । बज्रसैन बुलवाए तवै ॥
तबहीं भूपति कैसें कही । लेउ पितापद तुम अब सही ॥८८॥
तब कुमार बोलो करजोरि । हो महराज सुनो सु बहोरि ॥
जेठो भ्राता तात समान । ता आगें मोहि जोग न आन ॥८९॥
बिनहींकौं दीजै भूपाल । हुकम करौं तुमरो दरहाल ॥
इतनी सुनिकैं भूपति जबै । अधिक प्रसन्न भए सो तबै ॥९०॥
तुरत लयो महसैन बुलाय । सो भूपति दीनो पहिराय ॥
छपनकोटि जाके दीनार । ताको स्वामी करो ततकाल ॥९१॥
दयो सेठिपद ताकों सोय । आगें और सुनो जो होय ॥
अब जानौ बज्रसेनि कुमार । नित जावै नृपके दरबार ॥९२॥
साधै हुकुम नृपतिको सोय । भूपति अधिकप्रसन्न सु होय ॥

For Private And Personal Use Only

अब जेठो महासैन कुमार । मतिको हीन सु जाति गमार ॥६३॥
बरषैंसीं बीतीं अब सोय । नृप दरबार न जावै कोय ॥
एक दिवश भूपति तब कही । बज्रसैन तुम आवौ सही ॥६४॥
जेठो भ्राता तेरो सोय । मो दरबार न आवै कोय ॥
बरषैंसीं जु बीति अब गई । घरही मैं रहै बैठो सही ॥६५॥
तब कुमार बोलो करजोरि । हो महराज सुनो सु बहोरि ॥
बिनकौं तौ घर काम अपार । आवत नाहिं बने दरवार ॥६६॥
मोपर हुकुम तिहारो होय । तुम दरबार रहों नित सोय ॥
इतनी सुनि करि भूपति जबै । अधिक पसन्न भए सो तबै ॥६७
तुरतहिं लयो गजराज मगाय । सो कुमरा दीनो पहिराय ॥
कुंडल कड़ा पहिराए जबै । साल दुसाला जानो तबै ॥६८॥

राज मंत्रपद ताकौं दयो। सबके ऊपर सिर मुख भयो ॥
पुन्यथकी किमि किमि नहिं होय। पुन्य समानअवरनहिं कोय ॥६६॥
इस विधिसौं बज्रसैन कुमार। भोगैं भोग तहां सुखकार ॥
भूप करै जु बड़ो सनमान। सौंपो राजको सबरो काम ॥१००॥
राज मन्त्रपद पायो सोय। सब पर हुकुम जु ताको होय ॥
जेठे भ्रातको राखै मान। हुकुम करै ताको परमान ॥ १ ॥
बहतौ जानौ दुष्ट गमार। लघुसौं मानै दोष अपार ॥
ऐसें रहत बहुत दिन गए। आगे सुनो जु कारन भए ॥२॥
एक दिवस जेठो जु कुमार। मनमैं कैसो करत बिचार ॥
लघु भ्राता मेरो जह सोय। सब पर हुकुम जु ताको होय ॥३॥
भूप करै ताको सनमान। वाको आदर जगमें जान ॥

For Private And Personal Use Only

जाके आगें जानो सोय। मेरी वात न बूझै कोय ॥४॥
आधी रैन बीति जब गई। निज त्रियसों तब कैसें कही॥
लघु भ्राता मेरो अब जान। जाको आदर करै जहांन ॥५॥
जा आगे जानौ अब सोय। रंकहु मोहि गिने नहिं कोय॥
सब परजा करै हुकुम प्रमान। कोई न मानै मेरी आन॥६॥
तातें जाकौं बिष दै मारि। करौं निकंटक राज सम्हारि॥
सब पर हुकुम हमारो होय। हमहींकौं पूछै सब कोय ॥७॥

चालि छंद।

तब बोली धुरंधर नारी। पिय बात सुनो सु हमारी॥
ऐसे भ्रातकों बैन उचारो। धृग जीवन जन्म तुम्हारो॥८॥
तुम्है तात समान सु जानै। तुम आज्ञा शिरपर मानै॥

ऐसी चूक कहा है सोई । तातैं बाकों बिचारत द्रोही ॥९॥
तातैं बलमा सुनि लीजै । ऐसी बात न फेरि कहीजै ॥
अब कहि सु कही तुम जोई । ऐसी कहन जोग नहिं तोई ॥१०॥
बोलो तब दुष्ट गमारी । मेरी बात सुनो बरनारी ॥
निहचैं बिष दै करि मारौं । और बात कछू न बिचारौ ॥ ११ ॥
तब बोली कैसें नारी । पिय बात सुनौ जु हमारी ॥
बह तौ कुलदीपक जानौ । अधिको गुनवंत बखानो ॥ १२ ॥
बाके आगें जानौ सोई । तुम्है आँच न आवै कोई ॥
नित प्रति करौ भोग विलासी । बहतौ सु गुननकी रासी ॥ १३ ॥
तातैं बलमा सुनि लीजै । ऐसे भ्रातकों द्रोह न कीजै ॥
बोलो तब दुष्ट गमारी । मेरी बात सुनो बरनारी ॥ १४ ॥

For Private And Personal Use Only

विष दै करि मारौ सोई। करौ और विचार न कोई ॥
फिरि कैसें नारि समझावै। तासों कैसें बतलावै ॥१५॥
भ्राता मारैं मेरे कंथा। जु रि टूटै बांह तुरंता ॥
करि बैरी अकेलो पावै। बहुतै तब कोप करावै ॥१६॥
फिर जन्म धरो मेरे सांईं। ऐसो भ्रात मिलै कहुं नाहीं ॥
कछु पूरब पुन्य कमायो। ऐसो भ्राता तुम पायो ॥१७॥
तातैं बलमा सुनि लीजै। ऐसी बात न कबहूं कीजै ॥
फिरि बोलो दुष्ट जु कैसें। बरनारि सुनो तुम ऐसें ॥१८॥
बहु कहैं कहा अब होई। मारौ विष दै करि सोई ॥
तब बोली कैसें नारी। पिय बात सुनौ सु हमारी ॥१९॥
पुत्रहुको मरन जु होई। फिरि देय विधाता सोई ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो भ्रात मरन कहुं होई। फिर मिलनो दुर्लभ सोई ॥२०॥
तातैं बलमा सुनि लीजै। भ्राताकों द्रोह न कीजै ॥
फिरि दुष्टने कैसें कही है। मारौं निश्चै जु सही है ॥२१॥
बोली चतुरंग जु नारी। सांई सुन बात हमारी ॥
जह बात ठीक नहिं कोई। भ्राताकौं बिचारत द्रोही ॥२२॥
जो कहुं भूपति सुनि पावै। अधिको तुम्हे दंड दिवावै ॥
धन लच्छि लेय लुटवाई। अरु देशतैं देय कढ़ाई ॥२३॥
अपजस होवै जगमाहीं। जह कौन कुमति तुम्हे आई ॥
तातैं बलमा सुनि लीजै। ऐसी बात न फेरि कहीजै ॥२४॥
इस विधिसों नारि समझावै। वाके मन एक न आवै ॥
तब नारिसों कैसें कही है। हम बात सुनो जु सही है ॥२५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो दिवरा साथी होई । मेरो हुकुम न पालै कोई ॥
जो होय हमारी नारी । मेरी होबै आज्ञाकारी ॥२६॥
मारो बिष दै करि सोई । नहिं कोट चिनाऊं तोही ॥
इतनी सुनिकैं तब नारी । जानै रुदन करो है भारी ॥२७॥
नैनन चलै आंसू जाके । अति सोच हृदयँ भयो ताके ॥
मनमै सु बिचारत एसैं । कौन बात करौं मैं कैसें ॥२८॥
जो मारौं दिबरै सोई । मोकौं पाप सघन अति होई ॥
अरु जो मारौंमैं नाहीं । मोकौं दोष लगाबै सांईं ॥२९॥
जाकौं कौन कुमति अब आई । जाके पाप हृदय गयो छाई ॥
ऐसें बह रुदन करंती । कहुं नेक न धीर धरंती ॥३०॥
तब बोली कैसें नारी । पिय बात सुनो सु हमारी ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मैं पालौं हुकुम तुम्हारो। दिवराकौं बिष दै मारौं ॥३१॥
फिर मेरे बचनकों कन्थ। तुम यादि करोगे तुरन्त ॥
इतनी सुनि करिकैं कुमार। सुख पायो ताने अपार ॥३२॥
दोहा–इस विधिसौं तब दुष्टने, ताको करै उपाय ॥
और कथन आगें अबै, सुनौ सबै मन लाय ॥ ३३ ॥

चौपाई।

रुदन करै अधिको बह नारि। मनमें दुक्ख करौ सु अपार ॥
जबहीं प्रात भयो ततकाल। तहँतै नारि चली तब हाल ॥३४॥
पहुँची भोजन साला माहिं। ताःनै रसोई दई चढ़ाय ॥
बिष डारो व्यंजनके मझार। बिष डारै पकवान मझार॥३५॥
बिषकी करी रसोई जबै। और सुनौ नर नारी तबै ॥

For Private And Personal Use Only

जसबल तबहीं लयो बुलाय । तासौं हुकुम करो सु बनाय ॥३६॥
देवर हैं नृपके दरबार । तिनहिं सु ल्यावौ अब ततकार ॥
इतनी सुनिकरि जसबल गयो । जाय कुमरसौं कहतो भयो ॥३७॥
भावजनै बुलवायो तोय । चलौ ढील कीजै नहिं कोय ॥
इतनी सुनिकैं तबै कुमार । चलत भयो तहँतें ततकार ॥३८॥
सो आयो निज ग्रेह मझार । तब असनान करै सु कुमार ॥
फिर पहुंचो जिन मंदिर माहिं । श्रीजिनबरके दर्श कराहि ॥ ३६ ॥
फिर आयो निज गृह अब सोय । भावज पास पहुंचो जोय ॥
तब भावज बोली सुखकार । भोजन करि लीजै सु कुमार ॥४०॥
तबहि कुमर फिरि कैसें कही । भावज बात सुनो तुम सही ॥
मेरो भ्रात कहां अब सोय । बा बिन भोजन करौं न कोय ॥४१॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तबहीं भावज कैसें कही। उनके तन जु बिथा कछु भई।।
इतनी सुनिकैं तबै कुमार। भ्राता पास गयो ततकार ।।४२।।
जाय भ्रात सों कैसें कही। कौन बिथा तुम तनमें भई ।।
तुरतहि लाऊं बैद बुलाय। तुमकों नीको लेउ कराय ।।४३।।
तबहि दुष्ट फिरि कैसें कही। अब तौ बिथा मेरी घट गई।।
तुम भोजन सु करौ अब जाय। पीछेतें मै करौ सु आय ।। ४४।।
भ्रात हुकुमतें चलो कुमार। पहुंचो जाय रसोई द्वार ।।
भावज देखि दिवरकों जबै। आँसू चलैं नैनतें तवै।। ४५ ।।
तब भावज सों कैसें कहीं। हमरी बात सुनो तुम सही ।।
कारन कौन भयो तुम सोय। बदन मलीन सु दीखै मोहि।।४६।।
इतनी सुनिकैं भावज जबै। कछू जबाब न दीनो तबै ।।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चंदन चौकी दई डराय । कंचन थार परोसो आय ॥ ४७ ॥
षट रस आदिक व्यंजन जानि । तवै परोसो भोजन आनि ॥
दया अंग ताके है सोय । देखत बनो न तापै कोय ॥ ४८ ॥

छंद पद्धड़ी ।

जब ग्रास उठायो तब कुमार । भावज कर पकरो तबै हाल ॥
फिरि कहै दिवरसों तबै सोय । जे बिष भोजन मति करौ कोय ॥ ४९ ॥
तुम भ्रात करो मारन उपाय । मेरे बसकी कछु रही नाहिं ॥
इतनी सुनि करिकैं तब कुमार । उठि ठाड़ो तब हूबो सु हाल ॥ ५० ॥
निज महलनमें तब गयो सोय । तसु नारि कहै तासों जु सोय ॥
कह मलिन चित्त बालम सु अवै । इसको मोहि भेद सुनाउ सबै ॥ ५१ ॥
मन माहिं बिचारै तब कुमार । कह भ्रात दोष भाषौं जु सार ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आखिर अबला यह नारि होय। छिनमें पुनि प्रघट करै जु सोय॥५२॥
तबहीं सु नारिसों कहै सोय। इसको फिरि भेद बताउं तोय॥
तुम करसु रसोई करौ त्यार। तौ मैं भोजन तब करौ सार॥५३॥
चतुरंग नारि जानी जु सोय। कछु भ्रात उपाय करो जु कोय॥
मुझ बलम बात मोसों छिपाहिं। ताको हठ फिर कछु करो नाहिं॥५४॥
जे चतुर नारि जानौ जु सोय। पति हठपर हठ नहिं करै कोय॥
असनान करे ताने जु सार। पुनि करी रसोई तबै नारि॥५५॥
तब सोधि बलीता नारि जबै। जलगालनकी विधि जान सबै॥
सो क्रिया शुद्ध जानौ सुनारि। तब करी रसोई तबै त्यार॥५६॥
तब करिकैं रसोई त्यार भई। देखौ पुन्यतनो फल कैसोकही॥
सौधर्म मुनीश्वर तहां सार। ताही बनमैं तप करत हाल॥५७॥

For Private And Personal Use Only

तिन तीन पक्ष कीनो उपास । तव छीन शरीर भयो जु तासु ॥
भोजनके कारन तबै जान । आए नगरीमैं सो महान ॥५८॥
जब दृष्टि परे मुनि अनागार । निज त्रियसों बोलो तब कुमार ॥
कारन अहार नगरी मझार । आबै जु मुनीश्वर सुनौ नारि ॥५९॥
इतनी सुनि करिकैं नारि कही । अब धन्य भाग बालम जु सही ॥
३ यह धन्यघरी दिन आजु सार । मुनिराज काज आए अहार ॥६०॥
इतनी सुनि करिकै तब कुमार । पड़गाहि ऋषीश्वर तहां सार ॥
तब तीन प्रदत्तन देय जोय । पुनि नवधा भक्ति करी जु सोय ॥६१॥
तब दोष छयालिस टारि सार । तब दयो हाल मुनिकौं अहार ॥
फिरि जय जय शब्द जु गगनहोय । तहँ देव कहैं कैसें जु सोय ॥६२॥
अब धन्य भाग तेरो कुमार । तैं मुनि करपै कर धरो सार ॥
फिरि मुनितौ बनकौं गए सोय । तहँ ध्यानाऽरूढ़ भए सु जोय ॥६३॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तब पीछतैं आपुन कुमार । भोजन सु करो तानैं जु सार ॥
फिरि नारि सु भोजन करो जान । सो धन्य भाग निजको सु मानि ॥६४॥
दोहा—इस विधिसों ऋषिराजकों, दीनो शुद्ध अहार ॥
धन्य भाग ताको सु अव, धनि जाको अवतार ॥६५॥

चौपाई ।

भ्राताने जो करो उपाय । ताकी यदि करै कछु नाहिं ॥
अब सुखसौं तहँ रहै कुमार । आगे और सुनो बिस्तार ॥६६॥
दिन अथयो निशि जबहीं भई । फिरि तब दुष्ट नारि सों कही ॥
कैसो मारो भ्राता सोय । जीवत फिरै मरो नहिं कोय ॥६७॥
तबै नारि फिरि कैसें कही । हो भरतार सुनो तुम सही ॥
काहू जनाइ दयो सो हाल । भोजन छांड़ि गयो ततकाल ॥६८॥
जो मुझ झूंठी जानो कंत । बिषके भोजन देख तुरंत ॥

For Private And Personal Use Only

तबहि दुष्ट फिरि कैसें कही। फिरिकैं मारौ वाकों सही ॥६९॥
तब बोली कैसें बर नारि। मेरे बचन सुनो भरतार ॥
कहा कुमति उपजी तुम्हे आय। क्यों अब वृथां जु पाप उपाय॥७०॥
जाके करसों श्री ऋषिराज। लयो अहार सु धर्म जिहाज॥
सो किसहूको मारो कंत। वह मरनो अब नाहिं महंत॥७१॥
इतनी सुनिकरि तबै कुमार। कहत भयो सुनियो बरनारि॥
मारौं बाय भुलै करि सोय। ताकों ढील करौ मति कोय॥७२॥

ढार अहो जगति गुरुकी।

तब बोली बरनारि, कंथ सुनो तुम सोई।
सांच कहौं अब बात, तामें झूंठ न होई॥
मेरे भरोसें कंथ, अब रहियो मति कोई।
मोपैतौ भरतार, अब ऐसी नाहिं होई॥ ७३ ॥

चाहैं तौ कोट चिनाउ , चाहैं सूरी धरदीजै ।
चाहौं तौ भरतार , घरतैं काढ़ सु दीजै ॥
इतनी सुनिकै कुमार , जानि लई मन माहीं ।
मैहीं करौं उपाय , जह करने की नाहीं ॥ ७४ ॥

दोहा—इस विधिसों भावज तबै , दिवरा लयो बचाय ।
धन्य नारि जे जगतिमें , करुना तिन मनमाहिं ॥ ७५ ॥

चौपाई ।

यहतौ कथन रह्यो इस ठौर । आगे कथन सुनो अब और ॥
एक दिवस जसुभद्र सु राय । वैठो तो सो सभा लगाय ॥७६॥
चोर एक पकरो कुतबाल । नृपदरबार सु लायो हाल ॥
तब भूपति सों कैसें कही । हो महाराज सुनो तुम सही ॥७७॥
घने दिवसको तसकर सोय । मूसे नगर जानै सब कोय ॥

For Private And Personal Use Only

घने जीब मारे अधिकाय। आज पकरि पायो है ताहि ॥७८॥
इतनी सुनिकरि भूपति जबै। क्रोध करो तापर सो तबै ॥
जसवल लीने तबै बुलाय। हुकुम करो कैसें तब राय ॥७९॥
प्राण हरो जाके अब सोय। त्तन इक ढील करो मति कोय॥
तब जसबल बोलो करजोरि। हो महाराज सुनो सु बहोरि ॥८०॥
तुमरे हुकुमतैं मारों सोय। पाप लगे मारेको तोय ॥
इतनी सुनिकै भूपति कही। होय पाप तौ छांड़ौ सही ॥८१॥
तब जसबल बोलो करजोरि। हो महाराज सुनो सु बहोरि॥
तौ तुमहीं कौं पाप अपार। न्याउ नहीं नृपके दरबार॥८२॥
फिरि ऐसोई काम कराय। मूसि नगर जिय घात कराय॥
दोऊ विधि तुमहींकौं पाप। सोई करो हुकुम जो आप॥८३॥

जोगीरासा ।

इतनी सुनि करि भूपति जबहीं मनमें विरकित होई ॥
धृग लछिमी यह राज सु जानौ जामें सार न कोई ॥
मारौंतौ मोहि पाप जु लागै छाडैं अपजस होई ॥
जहतौ राज नरकगति देई जामें फेर न कोई ॥८४॥
किसको पुत्र पिता अब किसको किसके बाँधव भाई ॥
सबरे कुटुमकों पाप कमावै नर्क अकेलो जाई ॥
ऐसो राज न मोकों चहियें भृमों चतुर्गति माहीं ॥
राज करौंगो मुकति नगरको भूपतिके चित आई ॥८५॥
जेठे सुतको राज सु दीनो नृपने नीति विचारी ॥
सब जीवनसों मागि क्षमा अब पहुंचो अरनि मझारी ॥
श्री सौधर्म मुनीश्वरके अब जाय चरन शिर नाई ॥

For Private And Personal Use Only

श्री मुनिवर मोहि दीक्षा दीजौ तासौं पार लगाई ॥८६॥
तब मुनिबर फिरि कैसें बोले धनि भूपति जगमाहीं ॥
आछी अंतमैं तैनै बिचारी तुम सम और जु नाहीं ॥
सप्त दिवस तेरी आव सु माहीं बाकी रही है सोई ॥
इतनी सुनि करि भूपति जबहीं अति ही बिरक्त होई ॥८७॥

चौपाई ।

केस लोंच कीने तब राय । नगन दिगम्बर भए बनाय ॥
पंच महाब्रत धारे सार । भयो मुनीश्वर अरनि मझार ॥८८॥
जाब जीब सन्यास सुधार । त्योगो चरि प्रकार अहार ॥
अंत समाधि मरन करि सोय । तजे प्रान शुधभावन होय ॥८९॥
पंचम स्वर्ग लयो अवतार । भयो देवपद ताकों सार ॥
तहँके सुख भोगै अब सोय । कहँ लग ताको बरनन होय ॥९०॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दोहा—इस विधिसों नृपराजकों , भयो देबपद सार ॥
और कथन आगें अबै , सुनो सबै विस्तार ॥६१॥

चौपाई ।

अब भूपति सुत जानौ सोय। नाम जसोमति ताको होय ॥
सोतौ राज करै सुखकार । आगें और सुनो विस्तार ॥६२॥
मंत्री पुराने जानो सोय । बज्रसैन, राखे नहिं कोय ॥
सो घर बैठि रहो सु कुमार। कबहूं न जाय नृपति दरबार ॥६३॥
एक दिवस बह दुष्ट गँमार । गयो हतो नृप सभा मझार ॥
भूपतिसैं तब कैसे कही । हो महराज सुनो तुम सही ॥६४॥
मेरो लघु भ्राता भूपाल। आवन पाय नहीं दरबार॥
बहतौ राज बिनाशन हार । निहचैं जानौ तुम भूपाल ॥६५॥
जौ अब हुकुम तिहारो होय । बाको करौं उपाय जु सोय ॥

For Private And Personal Use Only

तबहीं भूपति कैसें कही । चाहो सो कीजो अब सही ॥६६॥
तोहि करो मंत्री मैं सही । कहि दीनी सो भूपति यही ॥
इतनी सुनि करिकैं सु कुमार । मनमें आँनद बढ़ो अपार ॥६७॥
फिरि आयो निज मंदिरमाहिं । मनमें कैसें कहै बनाय ॥
अबतो मोसैं नृप कहि दई । ताके मन कछु चिंता नहीं ॥६८॥
इस विधिसौं जानौ अब सोय । रहै निसंक महा सुख होय ॥
बहुत करो ताको सु उपाय । आगें और सुनो मनलाय ॥६६॥
एक दिवस बज्रसैन कुमार । सोवत तो निज महल मझार ॥
फाटक बंद दए करवाय । आगें और सुनो मनलाय ॥२००॥

ढार अहोजगति गुरुकी ।

आधी रैनके माहिं जागो दुष्ट गमार ।
सौतौ अब मनमाहिं कैसे करत विचार ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ताके महल मझार देउं सु अगिन लगाई।
तासों जरै ततकाल दाउ लगो मेरो आई॥ १ ॥
तहँतै उठो ततकाल तासु महलपै जाई।
दरबाजेतें धाय तानै अगिनि लगाई॥
फाटिक जरे ततकाल पैठी महल जु सोई।
धूमके उठे पहार अगिन प्रवेश जु होई॥ २ ॥
यहतौ कथन इसथान रहो है सुनो नरनारी।
अब सुरलोक मझार सुनियौ चित्त विचारी॥
प्रथम स्वर्गके माहिं हरि बैठो दरबारा।
अवधिज्ञान करि सोय इंद्र करै सु विचारा॥ ३ ॥
देवनसों सुरराय कैसें कहें समझाई।
वह बज्रसैन कुमार दान दयो मुनिराई॥

For Private And Personal Use Only

ताको भ्राता सोय मारन हेत उपाई।
सोबत है इह जान अगिन दई सु लागाई॥ ४ ॥
जो बह जरै कुमार प्रान तजै सु बनाई।
तौ मुनिकौं आहार फिरि देवै कोउ नाहीं॥
दान की महिमा जाय फिर जु रहै नहिं कोई।
तातैं लेहु बचाय मरन न पावैं दोई॥ ५ ॥
इन्द्र हुकुमतैं देब चालो सु ततछन धाई।
कूदो महलमें सोय कुमर पास तब जाई॥
सुरनै झटकी बांह आप गुपत ह्वै जाई।
कुमर त्रिया अब दोय तहँ जु उठे भहराई॥ ६ ॥
देखैं दृष्टि पसारि चारौ ओरतैं सोई।
धुआँनके उठे पहार अगिन प्रचंड जु होई॥

जित चितबै तित सोय गैल रही कहुं नाहीं ।
तब बोली बरनारि भई कुमौति जु साँईं ॥ ७ ॥
तब बोलो सु कुमार नारि सुनो तुम सोई ।
मनमें धीरज धारि चिंत करो मति कोई ॥
जो आयो है काल तौ अब कौन उपाई ।
उरमें जपि नवकार और सरन कोउ नाहीं ॥ ८ ॥
देब सुनी यह बात धन्य कहै तब सोई ।
धनि धीरज अब तोयं तो सम अवर न कोई ॥
बज्र दंडसों हाल फोरि सफील जु डारी ।
काढ़ि दए सो देव तब दोनों नरनारी ॥ ६ ॥
गहने पहिरें नारि तहँ जु बचे अब सोई ।
अरु लछिमी सु अपार सवही भस्म जु होई ॥

For Private And Personal Use Only

इस विधिसों सुर राय काढ़ि दए अब दोई।
धन्य दान जगमाहिं तासम और न कोई ॥ १० ॥

छंद ।

अब आधी रैनिके माहीं। दोउ पंथ चले तब जाहीं ॥
जो करम करै सो होई। जाको मेटनहार न कोई॥ ११॥
बह कोमल अंगन नारी। सेजन की सोवन हारी॥
धूप देखि बदन कुमिलाई। पाय प्यादे चली सु जाई ॥१२॥
सो कछुक दिननके माहीं। पहुँचे सु द्रोन बन जाई ॥
बनहीं में रहैं अब सोई। बैठे नरनारी दोई ॥१३॥
कुमराको बदन कुमिलानो। आंखिनतें नीर बहानो ॥
समझावै कैसें नारी । पिय बात सुनो सु हमारी ॥ १४॥
संपति जो भस्म भई है । तातें रुदन करो जु सही है॥

लछिमी जह चंचल होई। इसको पतियारो न कोई ॥ १५ ॥
छिनमें यह भूप बनावै। छिनमें यह रंक करावै॥
तातैं बलमा सुनि लीजै। लछिमीको सोच नहिं कीजै॥ १६॥
तुम हातनकी जु कमाई। फिरि अनि मिलै मेरे सांई ॥
इस विधिसों नारि समझावै। कुमाराकों धीर्य बँधावै ॥ १७॥
फिरि बोली कैसें नारी। पिय बात सुनो जु हमारी॥
कंकन मो करको लीजै। गहने नगरीमें धरीजै ॥ १८॥
भोजन सांमा मेरे कंत। अब लावौ जाय तुरंत ॥
कंकन लै चालो कुमारा। पहुंचो नगरीके मझार ॥ १९ ॥
कंकन धरो गहने जबहीं। लाओ भोजन सांमा तबहीं॥
असनान करो तब नारी। पुनि करी रसोई त्यारी ॥ २० ॥
जल गालनकी विधि जानै। इंधन सोधो पुनि तानै ॥

For Private And Personal Use Only

क्रियवांन चतुर वह नारी। सो करी है रसोई त्यारी ॥ २१ ॥
किरिकैं तैयार भई है। भरताकौं टेर दई है ॥
तब पुन्य तनो फल सोई। देखौ कैसो ततछिन होई ॥ २२ ॥

ढार ते गुरु मेरे उर बसो।

दान बड़ो संसारमें दान करौ नर नारि।
दान जगतिमें सार है जासौं होय भवपार ॥ टेक ॥२३॥
पहिताश्रव मुनिवर जहां ताही बनके माहिं।
दुद्धर तपकरते जहां छीन शरीर बनाय ॥दान०॥२४॥
पांच पांच उपवासजी कीने ते मुनि राय ।
कारन मुनि आहारके पहुंचे नगर सु जाय ॥दान०॥२५॥
सप्तदिवसलौ नगरमें आयो है अंतराय।
नितप्रति मुनि फिरि जात हैं और सुनौ मनलाय ॥दान०॥२६॥

अष्टम दिन लागो जबै भूप सुनी यह बात।
करुना बह मनमें करो कैसें तब पछितात ॥दान०॥२७॥
ऐसो कोउ न नगरमें आहार देय शुध भाय।
नितप्रति मुनि फिरि जात हैं आवत है अंतराय ॥दान०॥२८॥
अबतौ आजुमैं देंउ गो मुनिबरकों पड़गाय।
दोष छ्यालिस टारिकैं आहार देउं शुधभाय ॥दान०॥२९॥
इतनी कहिकै भूपनै डौंड़ी नगर दिवाय।
हिंसक जिय है नगरमें भूपदए कढ़वाय ॥दान०॥३०॥
द्वारा पेखन नृप करो मनबचतन करि राय।
पुन्य बिना मुनि ना मिलै और सुनो मनलाय ॥दान०॥३१॥
बनतैं मुनिवर डगरियो करुना निधि प्रतिपाल।
ईर्यापथ सोधत चले श्रीगुरु दीन दयाल ॥दान०॥३२॥

दृष्टि परे तब कुमरके हरषो है मनमाहिं।
निज त्रियसों कैसें कही आवत हैं मुनिराय ॥दान०॥३३॥
तबै नारिं कैसें कही सुनो बलम सुखकार।
धन्य भाग हमरो अबै आए दीन दयाल ॥दान०॥३४॥
मुनिवरकों पड़गाइयो दीजे शुद्ध अहार।
धन्य घरी दिन आजुको मुनिबर आए द्वार ॥दान०॥३५॥
इनतनीं सुनिकें कुमरनैं मुनिवरकों पड़गाहि।
नबधा भक्ति तबै करी करिकैं तब सुध भाय ॥दान०॥३६॥
दोष छयालिस टारिकैं दीनो शुद्ध अहार।
देब दुंदभी तब बजे बरषे फूल अपार ॥दान०॥३७॥
जय जय शब्द जु गगनमें देव करैं जैकार।
धन्य भाग तेरो कुमर मुनिकों दयो आहार ॥दान०॥३८॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुनिवर तौ बनकौं गए करुनानिधि ते सार।
पीछैं तब भोजन करो दोनों हैं नर नारि ॥ दान०॥३६॥
इस विधिसों जब कुमरने मुनिकौं दयो आहार।
ऋषिकरपै कर जब धरो धनि जाको अवतार ॥दान०॥४०॥

चौपाई।

भूपकान तब परी अवाज। देव दुन्दभी बाजैं आज ॥
भूपति जानी मनमें सार। काहू मुनिकौं दयो अहार ॥४१॥
जय जय शब्द गगनमैं होय। मेरो भाग भयो नहिं कोय ॥
जसबल तुरत दए पठवाय। देखौ कौन तलास कराय ॥४२॥
आयो देखि जब जसबल कही। हो महराज सुनो तुम सही ॥
परदेशी नरनारी दोय। बैठे बनमैं ते अब सोय ॥४३॥
तिन श्रीमुनिकौं दयो अहार। बरषे हैं तहँ फूल अपार ॥

For Private And Personal Use Only

इतनी सुनि करिकैं भूपाल । मनमें करत बिचार सुहाल ॥४४॥
मेरे नगरमें फिर फिर गए । काहू भाग न ऐसै भए ॥
धनि वह पुन्यबंत नरनारि । चलिकैं मिलाप करौंमें सार ॥४५॥
डौंड़ी नगरमें दई दिवाय । परजा लीनीं सबै बुलाय ॥
मंत्री आदि जुरे परधान । चलो मिलनकौं भूपति जान ॥४६॥

छंद पद्धड़ी ।

हय गय रथ बाहन चले सार । चवरँग सैन लीनी सु लार ॥
अरबी सुतरी बाजैं महान । फहरात चलैं आगें निशान ॥४७॥
इसभांति नृपति चालो खुसाल । पहुंचो बनमें तसु पास हाल ॥
गजकी चिक्कार सुनी सु जबै । सो डरी नारि ताकी सु तबै ॥४८॥
सो परी पियाके गोदमाहिं । तसु बलम कहै तासों बनाय ॥
मुनिराज अहार दयो जु सोय । चिंता हमकौं तौ कहा होय ॥४६॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो जानी नृपने तबै सार। मो सैन देखि डरपी सु नारि॥
फिरि जसबल दयो आगें पठाय। आवैं जु मिलनको तुम्है राय॥५०॥
इतनी सुनि करिकैं तब कुमार। मनमें आनंद बढ़ो अपार॥
अब सैन सहित पहुंचो सु राय। सब प्रजा संगताके सु जाय॥५१॥
गजतैं उतरो तब भूप हाल। विततैं आयो तबहीं कुमार॥
भूपति मिलाप तब करो सार। चितमे हरषो तबहीं कुमार॥५२॥
कैसैं मिलाप तब भयो सोय। मानो जन्म मित्र जे मिले दोय॥
तबहीं कुमारसौं भूप कही। तुम धन्य जन्म अवतार सही॥५३॥
तैं मुनिकरपै कर धरो सोय। तो सम नर अब दूजो न कोय॥
फिरि गजपर बैठारो कुमार। चंडोल चढ़ी ताकी सु नारि॥५४॥
नगरीमें पहुंचो तबै जाय। निज महलले गयो तबै राय॥
पहिराय दयो तबहीं कुमार। बस्त्रा जु भरन जानौ अपार॥५५॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सनमान करो अधिको बनाय। षटरस भोजन दीने जिमाय॥
अरु द्वादश नगरीं दई राय। न्यारे जु महल दीने कराय॥५६॥
देखो मुनि दान तनो प्रभाय। तबकुमर दुक्ख सबही पलाय॥
इस भांति कुमर जानो जु सार। नित भोग विलाश करै अपार॥५७॥
यातें नर नारि जु सुनो कान। वित माफिक दीजै सदा दान॥
इस भांति कुमर पुरद्रोन माहिं। सुखसों निवसे कछु दुक्ख नाहिं॥५८॥

दोहा—इसविधिसों पुनि कुमर तब, द्रोन नगरमें सार।
भूप करैं सनमान नित, भोगै सुक्ख अपार॥५६॥

चौपाई।

यह तौ कथा रही इस ठांय। आगें और सुनो मनलाय॥
कौंसलदेश बसे सुभ सार। पोदनपुर नगरी सुखकार॥६०॥
सो नगरी महिमा को कहै। स्वर्गपुरी मानौ वह लहै॥

For Private And Personal Use Only

ताही नगर इक सेठि सुजान । मकरध्वज तसु नाम बखान ॥६१॥
पूरब पुन्य उदै सुखकार । लछिमीको ताके नहिं पार ॥
सूर्यकला ताकें बर नारि । मानो सूरजकी उनहारि ॥६२॥
तासम रूप अवर नहिं कोय । मानो देवबधू जह होय ॥
शील धुरंधर गुनकी खानि । पतीव्रता वह नारि बखानि ॥६३॥
ताको सोर भयो जग माहिं । तासम रूपवतीं कोऊ नाहिं ॥
इक दिन ऐसो कारन भयो । सेठि तबै परदेशन गयो ॥६४॥
कारज बनिज गयो गुनवान । आगें और सुनो व्याख्यान ॥
इक बिद्याधर ठगई करी । सेठिरूप कीनो तिस घरी ॥६५॥
नारि छलनके कारन सोय । पोदनपुरकों रमतो होय ॥
ताके महलन पहुंचो जाय । तासों कैसें तब बतलाय ॥६६॥
मैं आयो तेरो भरतार । क्यों नहिं आदर करै सु नारि ॥

For Private And Personal Use Only

नारि हू जानी निश्चै सोय। आयो बालम मेरो होय ॥६७॥
तौलों नारि पुन्यतैं सार। आयो सेठि तबहि ततकार॥
दोनों ठाड़े एक स्वरूप। मानो सांचे ढरे अनूप ॥६८॥
दोनोंमें अब झगड़ो होय। ताके आंगन ठाड़े दोय ॥
बहतौ कहै मेरी अब नारि। बह कहै मै याको भरतार॥६९॥
नारि देखि अति विस्मय भयो। कह बिधना मोकों निरमयो॥
एक स्वरूप खड़े जे दोय। कह जानै मेरो पति कोय ॥७०॥
शीलवती नारी सुखकार। कहति भई तिनसों बचसार॥
दोनो रहो नगरमें सोय। जौलों तुमरो न्याव न होय॥७१॥
न्याउ निबेरे जब भूपाल। सो होसी मेरो भरतार ॥
दोनो महलतैं दए कढ़ाय। आगें और सुनो मनलाय॥७२॥
नारि चली निजघरतैं सोय। संग लए तब ताने दोय ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जब पहुंची नृपके दरवार। खैंचिकरी ताने सु पुकार ॥७३॥
हो महराज अरज सुनि लेउ। मेरी अरजी चितमें देउ ॥
एक स्वरूप खड़े जेदोय। इनमें मेरो पति है कोय ॥७४॥
मेरो न्याव करौ तुम भूप। न्यायवंत तुम अधिक अनूप ॥
इतनी सुनिकैं भूपति जबै। मंत्रिनसों बोलै पुनि तबै ॥७५॥
जाको न्याउ करौ अब सोय। छिन इक ढील करौ मतिकोय ॥
इतनी सुनि करि मंत्रिन कही। हो महराज सुनो तुम सही ॥७६॥
एक स्वरूप खड़े जे दोय। तिल तुस इनमें फेर न कोय ॥
दैव गती जानी नहिं जाय। हमहूंतैं जह होय न न्याय ॥७७॥
चाहौं तहँ निमटावै जाय। हमरे ध्यान न आवै राय ॥
तबै नारि फिरि कैसें कही। हो महराज सुनो तुम सही॥७८॥
जो तुमपै जह न्याव न होय। जसबल संग सु दीजै मोय ॥

For Private And Personal Use Only

संग जांय मेरे जे दोय। तासों सकती करैं न कोय॥७६॥
अंत न्याउ लैहौं निमटाय। हो महराज सुनो मनलाय॥
इतनी सुनिकैं भूपति कही। जसबल संग जु दीजे सही॥८०॥
चलति भई तहँतें सो नारि। देशन देश फिरै दुख भार॥
जहां जाय तहँ न्याउ न होय। न्यायनिपुन दीषै नहिं कोय॥८१॥
बहुत बात को कहै बढ़ाय। जाने मझाए वावन राय॥
न्याउ भयो ताको नहिं कहीं। रुदन करै अधिको तब सही॥८२॥
फिरि मनमें तिय करो विचार। द्रोन नगर भूपति दरबार॥
तापर मैं जैहौं अब सोय। जौ बाहूपै न्याउ न होय॥८३॥
जौ नहिं न्याव करै भूपाल। तौ मै प्रान तजौं ततकाल॥
चलति भई तहँतें अब जोय। द्रोन नगरमैं पहुंची सोय॥८४॥
जब पहुंची नृपके दरबार। खैंचिकरी तानै सु पुकार॥

हो महराज अरज सुनि लेउ। हमरी अरजी चितमें देउ॥८५॥
एक स्वरूप खड़े जे दोय। इनमें मेरो पति है कोय॥
मैं मझियाए बावन राय। मोकौं पति दीजे जु मिलाय॥८६॥
इतनी सुनि करि भूपति जबै। डोंड़ी नगर दिवाई तबै॥
सब नगरी लीनी बुलवाय। मंत्री आदि जुरे सब आय॥८७॥
मंत्रिनसौं तब भूपति कही। न्याउ करौ जाको अब सही॥
तब मन्त्री बोले करजोरि। हो महराज सुनो सु बहोरि॥८८॥
सहज न्याव जाको है नाहिं। दैव गती जानै कोई नाहिं॥
बात न्यायकी होती राय। सोजाती किमि बावन राय॥८९॥
तिनपै भयो न्याउ जह नाहिं। अचरज बात कही नहिं जाय॥
तातैं भूप सुनौं तुम सोय। हमहूंतैं जह न्याउ न होय॥९०॥
इतनी सुनिकैं नारी जबै। रुदन करै मनमैं बहु तबै॥

मरन भयो मेरो अब सोय । काहूँतैं जह न्याव न होय ॥६१॥
इतनी सुनिकरि बोलै राय । बज्रसेनिकौं लेउ बुलाय ॥
बाके बुतैं जु निबटै सोय । तौ अब सुजस हमारो होय ॥६२॥
जसबल तुरत दयो पठवाय । सो कुमारकौं लायो जाय ॥
देखत सभा उठी हरषाय । सिंहासन लीनो बैठाय ॥६३॥

चालि छंद ।

तब भूपति बोले कैसें । सुन कुमर बात अब ऐसें ॥
जह दीजै न्याव निमटाई । होय सुजस तुम्हारो भाई ॥६४॥
हमरो इतनो जस होई । बाके राजमैं निमटो सोई ॥
तब कुमर कहैं फिरि कैसें । महराज सुनो तुम ऐसें ॥६५॥
जह तुच्छ न्याव है सोई । सो तौ निमटै नहिं कोई ॥
जो कहुं अब दीरघ आवै । तौ कौन ताहि निमटावै ॥६६॥

इतनी सुनिकैं तब राई। मनमैं बहुतै सुख पाई ॥
तब भूपतिके मन आनी। जह न्याव करै जु निदानी ॥९७॥
कुमरानै घड़ा मगवायो। सो तौ दरबार धरायो ॥
तब बोलो कैसें कुमार। दोनो बात सुनो अधिकार ॥९८॥
जो बैठे घड़ाके माहीं। तहीकी नारि बनाई ॥
इतनी सुनिकै ठग जबहीं। आनंद करो मन तबहीं ॥९९॥
अब नारि मिली जह मोई। निहचैं करि जानो सोई ॥
तब सेठि कहैं मनमाहीं। अब नारि मिलै मोहि नाहीं ॥३००॥
फिरि बिद्याधरने जबहीं। तुछ रूप जु कीनो तबहीं ॥
तब बैठो घड़ाके माहीं। देखैं नृप चित्त लगाई ॥ १ ॥
तब कुमरा जानी सोई। जहतौ ठग बिद्या होई ॥
फिरि तासों कैसें कही है। कढ़ि आव घड़ातैं सही है॥ २ ॥

हम जानी नारि तिहारी। ऐसे कुमराने उचारी ॥
सो लयो है घड़ातैं कढ़ाई। ताकी मुसकैं चढ़वाई ॥ ३ ॥
खंभासों खैंचि बंधाई। ताकों बहु मारु दिवाई ॥
बिद्याभाजी पुनि तबहीं। ठग रहि गयो ठाड़ो जबहीं ॥ ४ ॥
तहँतैं तब काढ़ि दयो है। तब सेठि बुलाय लयो है ॥
तब कुमरा कैसें कही है। लेउ नारि तिहारी सही है ॥ ५ ॥
नारीसों कहै समभाई। तेरो न्याव भयो कै नाहीं ॥
तब नारि कहै पुनि कैसें। कुमरा सुन बचन जु ऐसें ॥ ६ ॥
अवतार धन्य है तेरो। भरतार मिलायो मेरो ॥
तैनें मेरो शील रखायो। तैने जु न्याव निमटायो ॥ ७ ॥
तियकंथ मिले अब दोई। तहँतैं जु चले तब सोई ॥
सब कहत सभा नरनारी। जाको मात धन्य अवतारी ॥ ८ ॥

तब भूप कहै मनमाहीं। कैसें जु बिचार कराहीं ॥
जह न्यायबंत अधिकारो। जातें राज चलै सु हमारो ॥ ९ ॥
तुरतहिं गजराज मगायो। कुमरा असवार करायो ॥
कानन कुंडल पहिराए। हातनमें कड़ा डरबाए ॥ १० ॥
गलमें गजमोतिन माला। पहिराए साल दुसाला ॥
मंत्रीपद ताहि दयो है। सबमें शिरमौर भयो है ॥ ११ ॥
सब राज काजको भार। सौंपो ताकौं भुअपाल ॥
बहुत बात को कहै बढ़ाई। दयो बांटि राज चौथाई ॥ १२ ॥
देखौ दान तनो फल सोई। कैसो जो ततछन होई ॥
तातें नरनारि सुनीजे। नित दान चतुर्विधि दीजै ॥ १३ ॥
जह दान समान न कोई। जासों जन्मसुफल अबहोई ॥
सुरगादिकके सुख पावै। अनुक्रम शिवपुरकों जावै ॥ १४ ॥

For Private And Personal Use Only

सोरठा—सुन तातैं नर नारि, दान चतुर्विधि दीजिये।
भव भव सुखदातार, इस भवकों जस लीजिये॥ १५ ॥

दोहा—राज मन्त्र पद कुमरकों, दयो तबै भूपाल।
और कथन आगें भविक, सुनो सबै नरनारि॥ १६॥

चौपाई ।

यह तो कथा यहांई रही । अबतो धारापुरमैं गई ॥
राज करै सु जसोमति राय । मंत्री है महासैन बनाय ॥ १७॥
ताके मंत्र थकी अब सोय । राज चौथाई रहो न कोय ॥
दाव्यो समीपी राजन आन । आगें और सुनो व्याख्यान॥ १८॥
एक दिवस भूपति जह कही । हो महसेनि सुनो तुम सही ॥
लीजै सैन सबहि सजबाय । अरि बाढ़ै तिन मारौ जाय॥ १९॥
इतनी सुनिकैं भूपति जबै । सैन सजाई तानै तबै ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हय गय रथ बाहन सजबाय । चलो तहाँतैं कोप कराय ॥ २० ॥
जब रनभूमि पहुंचो जाय । कोपो अरि तहँतैं सु बनाय ॥
जुद्ध भयो तिनसों अब सोय । पुन्य बिना सु विजय नहिं होय ॥२१॥
बैरी दाव तब कीनो जबै । लूटी सैन ताकी पुनि तबै ॥
हय गज रथ बाहन सु बनाय । ते लीने सबही जु छुड़ाय ॥ २२ ॥
आयो भजि तबहीं सु कुमार । सो पहुंचो नगरीके मझार ॥
पाई खबरि भूपतिने जबै । सो दरबार बुलायो तबै ॥ २३ ॥
कोप करो नरपतिने सोय । मेरो राज दीनो सब खोय ॥
तुरतहिं गर्धव लयो मगाय । तापै दयो महसैन चढ़ाय ॥ २४ ॥
अरु मुख कारो कीनो जबै । बहुत दंड दीनो सो तबै ॥
फिरि सब नगरी माहिं फिराय । ताके आगें ढोल बजाय ॥ २५ ॥
फेरि देशतैं दयो कढ़ाय । धन लछिमी सब लई लुटाय ॥

For Private And Personal Use Only

तब बोली ताकी बरनारि। मेरे बचन सुनो भरतार ॥२६॥
मारो भ्राता तुम अब सोय। कैसो राज निकंटक होय ॥
मैं बरजे मानी नहिं कोय। ताको फल भुगतौ अब सोय ॥२७॥
तातैं सुनो सबै नरनारि। बैर भाव छाडौं दुखकार ॥
समता भाव गहो अब सोय। तासौं पुन्य बढ़ै बहु कोय ॥२८॥
दोहा—कुमर दयो कढ़वायकैं, लच्मी लई लुटाय।
और कथन आगें अबै, सुनो सबै मनलाय ॥२९॥

चौपाई।

एक दिवस भूपति दरबार। बैठो तो सो सभा मझार ॥
एक जौंहरी लयो बुलाय। घने दिननको बिरध बनाय ॥३०॥
तासों भूपति कैसें कही। हमरी बात सुनो तुम सही ॥
किस विधि राज चलै हम सोय। ताको भेद सुनाबहु मोय ॥३१॥

५

तवहि बिरधफिरि कैसें कही। हो महराज सुनो तुम सही ॥
जो आवै बज्रसेन कुमार। तौ तुम राज चलै सुखकार ॥३२॥
तबहीं भूपति कैसें कही। बहतौ अगिन जलायो सही ॥
सो कहंतै आवै अब सोय। मै नीके करि बूझौं तोय ॥३३॥
तबै जौंहरी कैसें कही। हो महराज सुनो तुम सही ॥
पुन्यबंत नरकों अब सोय। सांकट दुख व्यापै नहिं कोय ॥३४॥

सवैया तेईसा।

पुन्य थकी महराज सुनो अब पावकतैं निहचैं जल होई।
पुन्य थकी श्रीपाल सुनो अब सागर पार भयो तरि सोई॥
पुन्य थकी महराज सुनो अरु गजकों ग्राह नहीं भय होई।
पुन्य थकी महराज सुनो अहिके मुखते पुनि अमृत होई॥३५॥
पुन्य थकी महराज सुनो बनतै नगरी पुनि होय निदानो।

For Private And Personal Use Only

पुन्य थकी महराज सुनो पुनि घर घर ताको आदर जानो ॥
पुन्य थकी महराज सुनो अब दुर्जनतैं बह सज्जन जान्नो ।
तातैं सुनो महराज अबै सो पुन्य बड़ो जगमैं सु बखानो ॥३६॥

चौपाई।

पूरब पुन्य करो सु कुमार । जरो नहीं सो अगिन मझार ॥
सो तौ द्रोन नगरके माहिं । मंत्रीपद राजाको जाहि ॥३७॥
तबहीं भूपति कैसें कही । तुमने कैसें जानी सही ॥
तबै बिरध बोलो करजोरि । हो महराज सुनो सु बहोरि ॥३८॥
त्रिय तौ एक पुरुष दो जानि । ताको न्याव पड़ो सो आनि ॥
काहूँ निमटायो नहिं जाय । ताने मझाए बावन राय ॥३९॥
तुमहूंपै बह आई सही । तुम परन्याव जु निमटो नहीं ॥
पहुंची द्रोन नगरके माहिं । वज्रसेनि दीनो निमटाय ॥४०॥

सो जस फैलो सब जग माहिं। तब हमने जानी जहराय ॥
इतनी सुनि करि भूपति जबै। मनमैं बिचार करै सो तबै ॥४१ ॥
जो काहूकों पठऊं सोय । तौ वह आवन को नहिं कोय ॥
तातैं मैहीं ल्यावन जाय। सो कुमारकों लाउं बुलाय ॥४२॥
तुरतहिं सैन लई सजवाय । हय गय रथ वाहन सु बनाय ॥
चलत भयो तहँ तैं अब सोय । दिनअरुरातिगिनेनहिंकोय ॥४३॥
चलत चलतजबकछु दिन गए। द्रोन नगरमे पहुंचत भए ॥
ऐसी खबरि कुमर तब पाय । आवत लेन तुम्हे सो राय ॥४४॥
इतनी सुनि कुमारने कही। मुख नहिं देखों नृपको सही ॥
लौटि जाय निज घरकों सोय । जियतमिलापनहमसें होय ॥४५॥

अड़िल्ल ।

इतनी सुनिके नारि कहै बचसार हो। ऐसी कहनी जोग नहीं भरतार हो ॥

For Private And Personal Use Only

आवै बैरी ग्रेह पहुनो है सही । ऐसी कहौ न बात नारि ऐसैं कही ॥४६॥

चौपाई ।

घर आयो तुमरे भूपाल । तासु करौ सनमान सु हाल ॥
धन्य नारि जे हैं जग माहिं । ऐसी पतिकों सीख दिवायँ ॥४७॥
इतनी सुनिकैं तबै कुमार । नृप स्वागतकों निकसोद्वार ॥
आदर बहुत करो सनमान । षटरस भोजन बीरा पान ॥४८॥
तबहीं भूपति कैसें कही । कुमर बात तुम सुनियों सही ॥
चूक माफ हमरी अब होय । चालौ देश आपने सोय ॥४६॥
तबै कुमर फिरि कैसें कही । हो महराज सुनो अब सही ॥
धारापुर नगरीके माहिं । जीवत तौ चलनेको नाहिं ॥५०॥
तबही भूपति ऐसें कही । भो कुमार सुनियों तुम सही ॥
जो तुम अब नहिं चलौ कुमार । तौ मैं प्रान तजों तुम द्वार ॥५१॥

For Private And Personal Use Only

तब बोली कैसें बरनारि । मेरे बचन सुनो भरतार ॥
अब तौ चलौ देशको कंत । ढील करौ मति चलौ तुरंत ॥५२॥
इतनी सुनिकै तबै कुमार । चलनेको तब करो करार ॥
भूपतिके दरबार सु जाय । कहत भयो नृपकों शिरनाय ॥५३॥
जो देवौ अब आज्ञा मोय । तौ मैं जाउं देशकों सोय ॥
मोहि लेन आए भूपाल । तातैं दीजै आज्ञा हाल ॥५४॥
तबही भूपति कैसें कही । कुमर बात तुम सुनियो सही ॥
अब जु कही सु कही तुम सोय । फिरि ऐसी कहनो नहिं कोय ॥५५॥
तब बोलो कैसें जु कुमार । हो भूपति मेरे हितकार ॥
एक वार तौ जाऊं सोय । फिरि आऊं तहँ रहौं न कोय॥५६॥
तब भूपति नै जानी सही । अब कुमार रहनेको नहीं॥
जौ हठ करि राखौं अब सोय । निहचैं भंग प्रीतिमें होय॥ ५७॥

For Private And Personal Use Only

आज्ञा दीनी तब भूपाल । जावौ देश आपने हाल ॥
भूपति दीनो तब पहिराय । बस्त्राऽभरन महा सुखदाय ॥५८॥
चउरँग सैन दई तब भूप । हय गय रथ बाहन जुअनूप ॥
फिरि आयो निज ग्रेह मझार । चलनेको तब भयो तयार ॥५६॥
तबहीं पंडित लयो बुलाय । घरी मुहूरत दिन सुधवाय ॥
चलत भयौ तहँतैं जु कुमार । चतुरँग सैन सजी सुखकार ॥६०॥

पद्धड़ी छंद ।

हय गय बाहन रथ चले सार । असवार चलैं ताकी सु लार ॥
गज ऊपर अंबारी धराय । तापर असबार भयो सु जाय ॥६१॥
अब नारि चढ़ी चंडोल सार । इस भांति चलो तहंतें कुमार ॥
अरबी सुतरी बाजैं महान । फहरात चले आगें निशान ॥६२॥
ठाड़े नकीब बोलैं जु सार । ऐसें नृपसंग चलो कुमार ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहु बात कहै पुनिको बढ़ाय। सो चलत भए तहंतें सु राय ॥६३॥
अब चलत चलत कछु दिन विताय। धारापुरमें पहुंचे सु जाय ॥
नगरीमें खबरि भई सु जाय। पुरतें निकसे सब हर्ष लाय ॥६४॥
आगें ह्वै लीनो तब कुमार। आनंद बढ़ो तिनकों अपार ॥
निज महल लै गयो तबै राय। सनमान करो तिनको बनाय॥६५॥
पहिरायो नृपने तब कुमार। फिरि मंत्रीपद दीनो जुसार ॥
अब दान तनो फल तरु सुजान। कैसो जो ततछन फलो आन ॥६६॥
तातें नरनारि सुनो जु सबै। नित दान चतुर्बिधि देहु अबै ॥
इस भांति कुमर जानो जुसार। आयो निज नगरीके मझार ॥६७॥

दोहा—इस विधिसों जु कुमार अब, आयो नगर मझार।
और कथन आगें भविक, सुनो सबै नर नारि ॥ ६८ ॥

For Private And Personal Use Only

चौपाई ।

नृप महलनतें चलो कुमार । सो आयो निज ग्रेह मझार ॥
सूने घर देखे तहँ जाय । बसैं काग तिनमे तहँ आय ॥६९॥
भावज भ्राता देखे नाहिं । अधिक करी चिंता मनमाहिं॥
कही नृपति सों तानै जाय । हो महराज सुनो मनलाय ॥७०॥
सूने मंदिर हमरे भए । भाबज भ्रात कहां मो गए ॥
तबहीं भूपति ऐसैं कही । कुमार बात तुम सुनियों सही ॥७१॥
तेरो भ्राता पापी होय । काढ़ि जु दयो देशतें सोय ॥
छपन कोटि तुम्हरे दीनार । सो लेबौ राखो भंडार ॥७२॥
तब कुमार बोलो करजोरि । भो महराज सुनो सु बहोरि ॥
तात समान जु मेरो भ्रात । सो तुमने काढ़ो अब दात ॥७३॥
सो तौ फिरै बननमें धाय । हम इहँ बैठे राज कराय ॥

For Private And Personal Use Only

तौ धृग जीवन मेरो होय । यह निश्चे करि जानौ सोय ॥७४॥
जाको भ्रात फिरै दुखकार । ताके जीवनकों धृगकार ॥
तातैं मैं अब ढूंड़ों जाय । सो भ्राताकों ल्याउं बुलाय ॥७५॥
तबहीं भूपति कैसें कही । हमरी बात सुनो तुम सही ॥
सर्पहि दुग्ध प्यावै कोय । तौ वह बिषही उगलै सोय ॥७६॥
त्यों तुझ भ्राता सर्प समान । भूलि न दरशन कीजै आन ॥
तबै कुमर फिरि कैसें कही । हो महराज सुनो तुम सही ॥७७॥
भ्राता बिन मो रहनो नही । सो अब बाकौं ल्याऊं सही ॥
वार वार बरजै भूपाल । मोह थकी मानै न कुमार ॥७८॥
तबही भूपति कैसें कही । तोकौं जान देउं मैं नहीं ॥
किंकर अबमैं देउं पठाय । तेरो भ्रात लेउं दुढ़वाय ॥७९॥
भूप हुकुमतैं जसबल जबै । चारि ओरकों दौरे तबै ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोतो एक अरनिके माहिं। दोनो देखे तहां फिराहिं ॥८०॥
इंधनके धारैं शिर भार। फिरैं तहां दोनों नरनारि॥
तब किंकरने कैसें कही। कुमर बचन सुनियो तुम सही॥८१॥

चलि छंद।

आयो अब भ्रात तुम्हारो। जाने सब काम सम्हारो॥
अब तुमहुं बुलाए सोई। चलो ढील करो मति कोई ॥८२॥
तब दुष्टने कैसें कही है। हम बात सुनो जु सही है॥
बाकों बहुत करो तो उपाई। कछु कसरि मैं राखी नाहीं ॥८३॥
मारनको मोहि बुलावै। मेरी भुसखाल भरावै ॥
मैतो जानेको नाहीं। बेंचि ईंधन उदर भराईं ॥८४॥
तब बोली कैसें नारी। पिय बात सुनो सु हमारी॥
पुन्यबंत पुरुष जगमाहीं। औगुन पर गुनहीं कराहीं ॥८५॥

For Private And Personal Use Only

दयाबंत पुरुष बह जानौ । अरु है सु गुननको निधानो ।।
तातैं ऐसो काज न होई । बह तौ कुल दीपक जोई ।।८६।।
अरु तुम कह लायक सोई । ताको करौ उपाय जु कोई ।।
तातैं बालम सुनि लीजै । मन चिंता कछु नहिं कीजै ।।८७।।
ऐसें पतिकों समझायो । धीरज तब ताहि बंधायो ।।
तब दोनो चले नरनारी । पहुंचे निज नगर मझारी ।।८८।।
गौडें पहुँचे तब जाई । कुमराने खबरि जु पाई ।।
अंबर आभूषण जानो । भेजे तिनको सु बखानौ ।।८९।।
जब निजघर पहुंचे जाई । तब भयो है मिलाप बनाई ।।
सनमान कियो सुखकारी । दिये षटरस भोजन भारी ।।९०।।
फिर चाले दोनो कुमारा । पहुंचे नृप सभा मझारा ।।
बज्रसेनि कहैं तब कैसें । महराज सुनो तुम ऐसें ।।९१।।

For Private And Personal Use Only

आयो मुझ भ्राता जोई। इन्ह देहु तातपद सोई ॥
इतनी सुनिके तब राई। महसेनि दयो पहिराई ॥६२॥
पुनि दयो है सोठिपद ताकों। फिरिकैं भूपतिने जाकों ॥
अरु छपन कोटि दीनारा। फिरि सौंपि दए तिन सारा ॥६३॥
फिरि छप्पन ध्वजा गढ़ाई। देशनमें कोठी चलाई ॥
इस विधिसों भ्रात बुलायो। ताको सब दुक्ख नशायो ॥६४॥
जे धन्य पुरुष जगमाहीं। औगुन पर गुनहीं कराहीं ॥
तिनहींको जीवन सार। तिनहीको धन्य अवतार ॥६५॥
दोहा—इस विधिसों जो कुमरने, भ्रात लयो बुलवाय ॥
और कथन आगें भविक, सुनो सबै मनलाय ॥६६॥

चौपाई।

रहत भयो महसेन कुमार। मनमें कैसें करत विचार ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जह लघु भ्राता मेरो जानि। बहुत करे मै औगुन आनि ॥६७॥
जब मन आवै वाके यही। प्राण हने मो छांड़े नहीं ॥
मलिन चित्त सो रहै बनाय। चिंता करि कछु नाहिं सुहाय ॥६८॥
एक समय बज्रसेनि कुमार। कहत भयो भ्रातासों सार ॥
ऐसी चिंता ब्यापी कोय। बदन मलीन सु दीखौ मोय॥६९॥
सो कहिये मोसें भृम खोय। मनमें संका करौ न कोय ॥
मनकी गांठि खोलि करि सबै। सांची भ्रात कहौ सो अबै ॥४००॥
तबै दुष्ट फिरि कैसें कही। जाकों कहत लाज नहिं भई॥
जब मै देखौं तुम्है कुमार। मोकों चिंता बढ़ै अपार ॥ १ ॥
जौ मरनौ तेरो अब होय। तौ मै रहौं निकंटक सोय ॥
जह बरतै मेरे मनमाहिं। तोसों सांच कही समझाय ॥ २ ॥

For Private And Personal Use Only

ढार जोगीरासा ।

इतनी सुनिकरि कुमरा जबहीं मनमें बिरकित होई ।
धृग यह राज अरु लक्ष्मी जानौ जामै सार न कोई ॥
किनकी माता किसको पिता अरु किसको पुत्र बनाई ।
जाके कारन इतनो कीनो सो भ्राता मो नाहीं॥ ३ ॥
सबरे कुटुमको पाप कमावै नर्क अकेलो जाई ।
जब पावै पुनि नर्क बसेरो तहँ कोई साथी नाहीं ॥
ऐसो राज न मोकों चहियै पाऊं दुक्ख घनेरो ।

---

१ इस कथाके छपाते समय हमको दो प्रतियां मिली थीं सो प्रयः छन्द तौ इस कथामें सबही गड़ बड़ हैं परंतु वो सब जहां तक हमारी समझमे आए दोनो प्रतियोसे मिलान कर सम्हार दीने ये छंद उन दोनो हीं प्रतियोंमे ठीक पाठ नहीं पाया सो हमारी समझमे आया तहां तक सम्हारा विशेष पाठकोंसे निबेदन है कि यदि शुद्ध प्रति कहीं मिले तो उसकी सूचना हमे भी दीजिये गा ता कि दूसरी बार छपाने पर सम्हार दी जायगी ।

For Private And Personal Use Only

राज करौंगो मुक्ति नगरको पाऊं सुक्ख अनेरो ॥४॥
तवहि भ्रातसों कैसें बालो भ्रात सुनो तुम सोई।
जह लछिमी मोकों नहिं चहियै चिंत करो मति कोई ॥
मै तो जाऊं अरनि मझारा तजहुं परिग्रह सारा ॥
मोपर भ्राता कीजे छिमा अब रहौ निसंक कुमारा ॥५॥
इतनी कहि करि कुमरा जबही निज महलनमें जाई।
निज त्रियसों तब कैसें बोलो नारि सुनो मनलाई ॥
तुम प्रसाद मै भोग सु कीने छमियो चूक हमारी।
मैं तो जाउं अरनिके माही होउं महाव्रत धारी ॥६॥
तुम तो त्रिय अब सुखसों रहियो चिंत करो मति कोई।
इतनी सुनि करि नारी बोली सुनियों कंथ हमारी॥
धन्य जनम अवतार तुम्हरो आछी बात बिचारी।

For Private And Personal Use Only

तुमको भरता छोडि कहां अब कह जु रहो घर माहीं ॥ ७ ॥
मैं हूँ चलि हो संग तुम्हारे होउं अरजिका जाहीं ।
इतनी सुनिकैं कुमरा जबहीं चलो तहांतें धाई ॥
निज भावजपै तबही पहुंचो ताहि कहै समझाई ।
धनि भावज तुम हमरी जानौ तो सम और न कोई॥ ८ ॥
तुमने मोपै बहु गुण कीने कहँलौ करहुं बड़ाई ।
जो तैने मेरे प्रान बचाए भावज सुनियों सोई ॥
तौ मै श्री मुनिको पद धारौं मेरी शुभ गति होई ।
तौ मै जाउं अरनिके माहीं होउं दिगंबर भारी ॥ ९ ॥
तातें छिमा अब मोपर कीजे भावज सुनहु हमारी ।
इतनी सुनिकै भावज बोली धनि देवर तुम सोई ॥
आछी तुमने बात बिचारी तुम सम अवर न कोई ।

जा पापीके संघ सु जानो मैं अब रहि हूं नाहीं ॥ १० ॥
संघ चलौंगी देवर तुम्हरे होउं अरजिका जाही ।
संघ त्रिया अरु भावजकों लै चलो तहांतैं सोई ॥
पहुंचो जाय अरनिके माहीं तहां मुनीश्वर होई ।
तीन प्रदत्तन दै शिर नायो प्रभु मोहि दीचा दीजे ॥ ११ ॥
फेरि मुनी तब कैसें बोले धनि तोकों अब सोई ।
तै मोपै जिन दीचा जाची तो सम और न कोई ॥
दीचा दीनी श्री मुनिवरने भयो दिगम्बर सोई ।
नगन दिगम्बर मुद्रा धारी केस लोंच तब कीनो ॥ १२ ॥
पंच महाव्रत जानै धारो तब चारित्र सु लीनो ।
भावज और त्रिया पुनि ताकी भई अरजिका जाई ॥
पंच महाव्रत तिन अव धारो दुद्धर तप जो कराहीं ।

For Private And Personal Use Only

धनि यह समझ सो बुद्धि जु जिनकी धनि यह धीरजधारी ॥१३॥
इह तौ कथन अब रहो इहांई और सुनो मनलाई ।
द्रोन नगरके भूपतिने पुनि जे खबरैं सुनिपाई ॥
मंत्री तुम्हारे दीक्षा धारी सुनिकैं विरकित होई ।
धृग यह राज सो लछिमी जानौ जामै सार न कोई ॥१४॥
जेठे सुतकौं राज सु दीनो सबसों छिमा कराई ।
तब पटरानी सों नृप बोलो नारि सुनो मनलाई ॥
मै तौ जाउं अरनिके माहीं होउं मुनीश्वर सोई ।
मो पर छिमा अब सबही कीजौ चिंत करौ मति कोई ॥१५॥
तब रानी सब कैसे बोलीं धनि भूपति सुखकारी ।
धनि धीरज अब तुम्हरो जानौ धनि यह बात बिचारी ॥
हमहूं चलिहैं संग तुम्हारे होय महाव्रत धारी ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इतनी सुनिकरि भूपति तबहीं धनि धनि बैन उचारी ॥१६॥
देश देशके राजनको अब ताने खबरि पठाई।
जो कोई जन दीक्षा धारौ सो आवौ अब धाई॥
बहुत नृपति हितकारी आए संग भए अब सोई।
लै रानी सब नरपति चालो ढील करी नहिं कोई ॥१७॥
चलत चलत पुनि कहलौ आए वाही अरनिके माहीं।
बिनहीं मुनिपै दीक्षाधारी और सुनो मनलाई॥
नगन मुनीश्वर होय दिगंबर केश लोंच तब कीनो।
ऐसै भूपति संग जु ताके तिन चारित्र सु लीनो ॥१८॥
रानी बहत्तरि संग जु ताके भई अरजिका सोई।
दुद्धर तप तहां सबही करते और सुनो सो होई॥
राय जसोमति खबरि जु पाई भूप सुनो सुखकारी।

For Private And Personal Use Only

थोरे दिननको मंत्री तुम्हारो गयो हतो तहँ सोई ॥१९॥
द्रोन नगरमे मंत्री भयो हो भूप सुनो तुम सोई।
ताकी प्रीतिसों तहँके भूपति आय मुनीश्वर होई॥
तुम कह राय विराजे गरवसों क्यों अब चेतत नाहीं।
जेठे सुतकों राज सु दीनो सबसों छिमा कराई॥२०॥
तब रनिवासमें भूपति पहुचे कैसैं कहै समझाई।
पटरानीसों तबहीं बोलो नारि सुनो मनलाई॥
हमतौ अब जिनदीक्षा धारें चिंत करौ मन नाहीं।
तब रानी मिल कैसे बोली सुनियां भूप हमारी॥२१॥
हमहूं चलि हैं संग तुम्हारे तप धारै सुखकारी॥
इतनी सुनिकैं भूपति जबहीं मनमें आनंद कीनो।
और सनेही नृपति बुलाए ते आए परवीनो॥२२॥

सबरे संगको नरपति लैकैं लै रनिवास जु भारी।
बाही अरनिमैं तबहीं पहुंचो मुनिपै दीक्षा धारी ॥
बासठि राजा संघ जु ताके भए मुनीश्वर सोई।
रानी सप्त जो भई अरजिका तप करतीं तहँ सोई ॥ २३ ॥
इस विधिसों पुनि बावन राई भए मुनीश्वर सारी।
दुद्धर तप पुनि तहँ अब करते सहत परीषह भारी ॥
धनि उपदेश कुमरको जानो भयो सबै सुखकारी।
छांड़ि जगति सुख मुनिपद धारो तिन पद धोक हमारी ॥ २४ ॥
दोहा—इस विधिसों बा अरनिमै, भए मुनीश्वर सार।
धनि उपदेश कुमारको, भयो सबै सुखकार ॥ २५ ॥

ढार त्रिभुवनगुरु स्वामी जी।

बज्रसेंनि महराजा जी धरम जिहाजा जी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अति घोर तप करत तहां अब जानियों जी ॥
पावस ऋतुमाहींजी तरुतल सु रहाइ जी ।
अति घोर तब वर्षा सहत सु जानियो जी ॥ २६ ॥
शीतकालके माहीं जी नदितीर रहांईं जी ।
के तालकी पारिपै कर्मन नाशियो जी ॥
ग्रीषम ऋतु माहीं जी परबतपै रहाइ जी ।
जहँ भानुतपैं अरु पर्वत जानियो जी ॥ २७ ॥
द्वैवीश परीषह जी जु सहैं जगदीशा जी ।
उपसर्ग सहैं धीर बीर सुखकारी हैं जी ॥
अरि मित्र बरावर जी समभाव सु धारै जी ।
नहीं राग अरु दोष न काहूपै कराबहीं जी ॥ २८ ॥
षट करुना पालैं जी सब दुखकौं टालैं जी ।

For Private And Personal Use Only

भुवि सोधि सु चालैं करुना निधि पालहैं जी ॥
दुद्धर तप कीनो जी भयो तन छीनो जी ।
अति घोर तप करो सो जानियो जी ॥ २९ ॥
द्वै मासको जानौ जी उपवास सु ठानो जी ।
कारन आहार सो नगरमे आईया जी ॥
इक धनुष प्रमाना जी भुअ सोधि महाना जी ।
नासा दृष्टि धारैं पुनि चित न चलावहिं जी ॥ ३० ॥
नगरीमै जानो जी अहारके कारन जी ।
दुठ भ्रातकी नजरि परे सो जानियो जी ॥
मनमैं सु विचारै जी मम बैरी सु आवै जी ।
मेरी नारि अरजिका जानै कराइयो जी ॥ ३१ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाकौं पड़गाहौं जी बिषाऽहार जिमाऊं जी ।
इस भांति सु जाके प्रान हनाइयें जी ॥ ३२ ॥
मुनिवर पड़गाहे जी जाके घर आए जी ।
मुनि पुन्य तनो फल अब मुनि लीजियो जी ॥
इक सुर जहँ आयो जी सूकर बनि धायो जी ।
मुनिराजके ढिग तहँ ठाड़ो भयो आनिकैं जी ॥ ३३ ॥
अंतराय करायो जी मुनिबर जु फिरायो जी ।
फिरि जाय अब बनमे श्री मुनि पहुंचियो जी ॥
तब अवधि विचारी जी जह बैरी भारी जी ।
तातैं पूरब बैर चुकाय अब दीजियै जी ॥ ३४ ॥
एकांतर जाई जी जिन ध्यान धराई जी ।
अति धीर तहँ ठाड़े अरनिके माहीं जी ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जब दुष्ट बिचारी जी ले खड़ग सु भारी जी।
ताकों अब जाय सो तौ अब शिरमें छेदि हौं जी ॥ ३५ ॥
लै खड़ग सु चालौ जी पापी अति भारी जी।
मुनिपै अब जाय खड़ग सु चलाइयो जी ॥
फिरि सुर जहँ आयो जी तसु कर सु बँधायो जी।
तहँ ठाड़ो अब इत उत चलि नहिं पावहीं जी ॥ ३६ ॥

चालि छंद।

भूपतिने खबरि जु पाई। जसबल दीने दौराई ॥
फिरि मुसकैं ताकीं चढ़ाईं। लै आए नगरके माहीं ॥३७॥
फिरिकैं रासभ मगवायो। तापर असबार करायो ॥
अरु मुखकारो जब कीनो। ताकों दीरघ दंड सु दीनो ॥३८॥
फिरि सबरे नगर फिरायो। जाके आगें ढोल बजायो ॥

For Private And Personal Use Only

धृग धृग सबही उच्चारै। बालक मिलि कंकर मारें ॥३६॥
फिरि देशतैं दश्रो कढ़वाई। धन लक्ष्मी सब लुटवाई ॥
भूपतिनै दुहाई फिराई। सोतौ सब देशन माहीं ॥४०॥
जाकों जो बैठन देहौ। ताकी भुसखाल भरैहौं ॥
इस विधिसों जानो सोई। ताकों तहँ दंड सु होई ॥४१॥
अब रहै बननके माहीं। तहँ तौ अब भ्रमन कराहीं ॥
मुनि घातक सोय कहावै। काहू ठौर बैठ नहिं पावै ॥४२॥
जहँ जाय तहां दुख होई। कर कंकर मारत सोई ॥
ऐसे भृमतो बन माहीं। छिन साता ताकों नाहीं ॥४३॥
तृष छुधा सहै अधिकारी। सो जानो बहु दुख भारी ॥
परनाम रुद्र जो करिकैं। जाने छोड़े प्रान दुख भरिकैं ॥४४॥
फिरि छटमे नर्क जु माहीं। अवतार लयो सो ताहीं ॥

सत्ताइस सागर जानो। ताकी तहँ आयु बखानो ॥४५॥
तहँके दुखकी अब सोई। कहिबे समरथ नहिं कोई ॥
गनधर हू गम्य जु नाहीं। जानै सो केवल माहीं ॥४६॥
तातें नर नारि सुनीजे। बैर भाव कदापि न कीजे ॥
राखौ समता अब सोई। तातैं बहुतै सुख होई ॥४७॥
दोहा—इस बिधिसों अब दुष्ट वह, परो जु नर्क मझार।
और कथन आगें भबिक, सुनो सबै नरनारि ॥४८॥

चौपाई छंद।

अब तो बज्रसेंनि मुनिराय। दुद्धर तप कींनो अधिकाय ॥
अंत समाधि मरन सो ठान। शुद्ध भावतें त्यागो प्रान ॥४९॥
पहुंचे षोड़स स्वर्ग मझार। भयो इंद्रपद ताकों सार ॥
बाइस सागर आयु प्रमान। सुंदर रूप सु गुनहिं निधान ॥५०॥

For Private And Personal Use Only

तहँके सुख भोगै अब जाय। कवि कहिबे समरथ नहिं ताय॥
ताकी त्रियने बहु तप कियो। अंत सन्यास मरन तब लियो॥५१॥
शुधभावन तजि प्रान सु सार। इंद्रनी ताकी सुखकार॥
ताकी भावज है सुखकार। कीनो तप दुद्धर अधिकार॥५२॥
सही परीषह ताने सार। तहँ उपसर्ग्ग भए जु अपार॥
अंत सन्यास मरन करि जबै। शुद्धभाव तजि प्रान सु तबै॥५३॥
स्त्री लिंग छेदि सुखकार। ताही स्वर्ग्ग लयो अवतार॥
ताकी महिमा बरने कोय। इंद्रके ढिग प्रतिइंद्र जु होय॥५४॥
अब तौ द्रोन नगरके राय। दुद्धर तप कीनो सुखदाय॥
अंत समाधि मरन करि सार। द्वादश स्वर्ग्ग लयो अवतार॥५५॥
तहँके सुख भुंजै अब सोय। आगें और सुनो सो होय॥
राय जसोमतिने तप करो। अंत सन्यास मरन तब धरो॥५६॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो तौ अष्टम स्वर्ग मझार । भयो देव पद ताकौं सार ॥
बहुत बात को कहै बढ़ाय । बहुत कहैं तौ कथा बढ़ि जाय ॥५७॥
जिन जिननै जैसो तप करो । तिन तिननै तैसो पद धरो ॥
इस विधिसों सबही नर नारि । लयो स्वर्ग पद तिन अवतार ॥५८॥
देखौ दान तनो फल सोय । ताको इंद्रासन पद होय ॥
तातें नर नारी सुन लीजे । नितप्रतिदानचतुर्विधि दीजे ॥५६॥
दान समान अवर नहिं कोई । जासों अजर अमर पद होई ॥
तातैं भव्य जीव सुनि लीजै । वितमाफिकनितदानसुदीजे ॥६०॥
लखि सुपात्रको दीजे दान । दुखित भुखितके पोषै प्रान ॥
एकहु पुरुष जु संग जिमावै । दुखी देखिकैं पोष करावै ॥६१॥
जौ इतनीहूं सकति न होय । एकहि रोटी दीजै कोय ॥
जौ इतनी हूं सकति न होय । एकहि ग्रास देउ भवि लोय ॥६२॥

For Private And Personal Use Only

बहुत बात को कहै बखान । वित माफक नित दीजै दान ॥
तातैं नर नारी सुन लीजे । दान बिनाभोजननहिं कीजे ॥६३॥
दानहितैं हरि हलपद पावै । दानहिंतैं चक्री गुन गावै ॥
दानहिंतै अहमिंद्र कहावै । दानहिंतैं शिव सुंदरि पावै ॥६४॥
बहुत बात को कहै बढ़ाय । दानहिंतैं त्रिभुवनको राय ॥
तातैं नर नारी सुन लीजे । दान बिनाभोजननहिंकीजे ॥६५॥

चौपाई ।

दानकथा यह पूरन भई । भारामल्ल प्रघट करि कही ॥
भूल चूक अक्षर जो होय । पंडित शुद्ध करौ तुम सोय ॥६६॥
मैं मतिहीन जु हौं अधिकार । छमियोंबुधिजनसबनरनारि ॥
पढ़ै सुनै जो अब मनलाय । जनम जनमकेपातिकजाय ॥६७॥
दुख दलिद्र सब जाय नशाय । जो यह कथा सुनै मनलाय ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुत्र कलित्र बढ़ै परिबार। जो यह कथा करै बिस्तार ॥६८॥

दोहा—दानदथा पूरन भई, पढ़ौ सुनौ नित सोय।
दुख दरिद्र नाशै सबै, तुरत महाफल होय ॥ ६९ ॥

लघु धी तथां प्रमादसों, शब्द अर्थ की भूल।
सुधी सुधारि पढ़ौ सदां, ज्यों पावौ भवकूल ॥ ७० ॥

जैसी पुस्तकमें लिखी, तैसी छापी सोय।
शुद्ध अशुद्ध जु हाये कहूं, दोष न दीजौ मोय ॥ ७१ ॥

इति दानकथा समाप्त।

पुस्तकें मिलने का पता—

बद्रीप्रसाद जैन पो० नीबकरोड़ी जि० फतेगढ़।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीसमोशरण पूजन विधान भाषा।

ऐसा कौन प्राणी जैन समाजमें होगा जो कि समोशरणके माहात्म्यसे अनभिज्ञ होगा अर्थात् सबही जैनी समोशरणमहिमासे परिचित हैं जिन तीर्थंकरदेवने घातिया कर्मोंका नाशकर डाला है उन्हें केवलज्ञान प्राप्त होय है तब इन्द्रआज्ञासे कुबेर समोशरणकी रचना करै है तिसका वर्णन इस प्रकार है प्रथम कोटके चार द्वारनपर चार मानस्थम्भ होय हैं जिनको देखकर मानी जनोंका मान जाता रहै है अर्थात् भगवानकी पुण्य प्रकृतिका ऐसा उदय है कि जिनके अतिसय कर नम्री भूत होय हैं और जब भीतर जायकर समवशरणस्थ विभूतिको देखै हैं तब तौ प्रणियोंके अनेक विकल्प दूरि भागि जांय है जैसे प्रभूके प्रभा-मण्डल झलकै है उसमें प्राणियोंके सात २ भव दिखाई परैं हैं अर्थात् तीन जन्म पहिले के और एक वर्तमान तीन जन्म जो अगाडी होवैंगे ऐसी २ आश्चर्य कारी अनेक बातोंको देख कर क्रोधही है स्वभाव जिनका जैसे मूसाको देखनेसे बिलावको, सर्पके देखनेसे मोरको, तथा हिरणको देखकर सिंहको होता है ऐसे २ जाति विरोधी जीव भी शांति स्वभावी होय एक स्थानमें तिष्ठैं है और धर्मोपदेश सुनकर अपना २ कल्यान करैं हैं इत्यादि समोशरण की महिमा कहां तक लिखी जाय कोई मन्द बुद्धी सागरको गागरिमे नहीं भर सक्ता है अब उसी समोशरणका पाठ भाषा लालजीतकृत छपाया है सो पाठकोंसे विनय करता हूं कि स्वयं पुस्तक मगाकर पढ़िये और संतुष्ट हूजिये।

पता—बद्रीप्रसाद जैन, पो० नीबकरोड़ी (फतेगढ)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only